• कविताएं...

अप्पू

एक दिन नन्हा, नटखट अप्पू
चुनमुन के घर आया,
बोला एक आइडिया चुनमुन
मेरे मन में आया।
जमकर करूं पढ़ाई, फिर मैं
बनूं बड़ा एक अफसर,
मेरी मदद करो तो चुनमुन
पढ़ लूं मैं भी अक्षर।
चुनमुन बोला बात ठीक है
चलना तुम स्कूल,
पाठ पढ़ाऊंगा मैं अप्पू
यदि जाओगे भूल।
नई किताबें, बस्ता लेकर
अप्पू पढने जाएगा,
चुनमुन का है पक्का वादा
पूरा साथ निभाएगा।

■ प्रकाश मनु

आई कुल्फी

अम्मा अपने बटुये में से,
कुछ तो नोट निकालो।
बाहर बिकने आई कुल्फी,
चार पांच मंगवालो।
पापा के तो दांत नहीं हैं,
तू भी न खा पाती।
तीन चार तो मैं खा लूंगा,
एक खायेगी चाची।
अम्मा बोलीं राजा बेटा,
बटुआ तो है खाली।
जरा देर पहले पापा ने,
कुल्फी चार मंगाली।
दो तो पापा ने खाली हैं,
मैंने भी दो खाई।
तुझे हुई है सरदी बेटा,
तुझको नहीं दिलाई।

■ प्रभुदयाल श्रीवास्तव

• चुटकुला...

शिक्षक : चिंटू, तुम रोज देर से स्कूल क्यों आते हो?
चिंटू : सर, क्या करूं... रोड पर लिखा है 'आगे स्कूल है, कृपया धीरे चलें'!
शिक्षक : शांत!
अध्यापक : रमेश, बड़े होकर क्या बनोगे?
रमेश : सर, शादीशुदा!
अध्यापक : मेरा मतलब है क्या हासिल करोगे?
रमेश : सर, दुल्हन!
अध्यापक : अरे, अपने माता-पिता के लिए क्या करोगे?
रमेश : सर, बहू लाऊंगा

• जानकारी...

पहाड़ों की चट्टानों में कैसे बन जाती है मीथेन गैस

हाल ही में सिक्किम के नामची जिले में हुए भयानक टनल हादसे ने इस बात को एक बार फिर सामने ला दिया है कि पहाड़ों की चट्टानों के अंदर छिपी मीथेन गैस कितनी खतरनाक साबित हो सकती है। दरअसल, 20 जुलाई 2026 को सिक्किम के समरडुंग इलाके में बन रही एक सुरंग में यह हादसा हुआ। बताया जा रहा है कि सुरंग के अंदर चट्टानों में दबी मीथेन गैस अचानक तेजी से बाहर निकली, जिसके कारण सुरंग मे जोरदार धमाका हुआ और देखते ही देखते पूरी सुरंग धुएं और जहरीली गैस से भर गई।

इस पूरी घटना में सबसे हैरान करने वाली बात ये है कि इस दर्दनाक हादसे में अब तक करीब 21 मजदूरों की मौत हो चुकी है, जबकि कई मजदूर अब भी सुरंग के अंदर फंसे हुए बताए जा रहे हैं और बताया जा रहा है कि अभी भी रेस्क्यू टिम मजदूरों के रेस्क्यू में लगी हुई है। इसी हादसे के बाद हर किसी के मन में यही सवाल आ रहा है कि आखिर पहाड़ों की चट्टानों में यह जानलेवा गैस बनती कैसे है?

चट्टानों में मीथेन गैस बनने की प्रक्रिया

ऐसे में वैज्ञानिकों के मुताबिक मीथेन गैस सिर्फ कचरे के सड़ने से ही नहीं बनती, बल्कि एक खास तरह की प्रक्रिया से बनता है। यह प्रक्रिया खासतौर पर उन पहाड़ी इलाकों में होती है जहां पेरिडोटाइट और सर्पेंटीनाइट जैसे लोहे से भरपूर खनिज पाए जाते हैं। जब पानी इन खनिजों के संपर्क में आता है, तो एक रासायनिक क्रिया होती है, जिसमें हाइड्रोजन गैस बनती है और फिर यही हाइड्रोजन आगे चलकर चट्टानों में मौजूद कार्बन से मिलकर मीथेन गैस बना देती है। यह गैस चट्टानों के अंदर मौजूद बेहद बारीक दरारों और छेदों में जमा होती रहती है, और अक्सर इसका पता तब तक नहीं चलता जब तक खुदाई, या विस्फोट न किया जाए। यही वजह है कि इन इलाकों में ऐसी गैस के अचानक रिसने का खतरा हमेशा बना रहता है।

कितनी जानलेवा साबित हो सकती है यह गैस?

मीथेन गैस रंगहीन और गंधहीन होती है, यानी इंसान इसे न देख सकता है न सूंघ सकता है। वहीं, अगर बंद सुरंग हो तो इसका खतरा और भी बढ़ जाता है। सिक्किम हादसे में भी यही देखने को मिला, जहां रेस्क्यू टीमों को सुरंग के अंदर घुसने में भारी दिक्कत आई, क्योंकि जहरीली गैस और ऑक्सीजन की कमी की वजह से बिना खास उपकरणों के अंदर जा ही नहीं सकते थे। मीथेन गैस बेहद ज्वलनशील होती है, यानी अगर यह किसी बंद जगह में जमा हो जाए और चिंगारी लग जाए तो तुरंत विस्फोट हो सकता है, ठीक वैसे ही जैसे सिक्किम की सुरंग में हुआ। इसके अलावा अगर यह गैस किसी बंद जगह में ज्यादा मात्रा में भर जाए तो वहां ऑक्सीजन की कमी हो जाती है, जिससे दम घुटने और जान जाने का खतरा बढ़ जाता है।

• यहूदी कहानी

मित्तो बकरी

रुबिन और मित्तो ने घास के उस टीले में तीन दिन बिताये। रुबिन, मित्तो के साथ ही बड़ा हुआ था। वो उसे हमेशा से प्यार करता था, पर इन तीन दिनों में मित्तो के प्रति उसका अनुराग बेशुमार बढ़ा था।

मित्तो, रुबिन को दूध पिलाती और उसे गर्म रखती। अपने धीरज से वो उसे शांत रखती। इन तीन दिनों में रुबिन ने उसे न जाने कितनी कहानियां सुनायीं, जिन्हें मित्तो ने अपने कान खड़े कर बड़े ध्यान से सुना...

गतांक से आगे...

जब रुबिन ने उसका अभिवादन किया तो बकरी ने जवाब में कहा, 'माँ.....' शायद उसके कहने का आशय था, 'जो कुछ भगवान ने हमें दिया है- गर्मी, ठण्ड, भूख, खुशहाली, अँधेरा और रोशनी, हमें सभी चीजों को तहेदिल स्वीकार करना चाहिए।' सोकर उठने के बाद रुबिन को भूख लगी थी और वो खुश था कि मित्तो के पास ढेर सारा दूध था। मित्तो दिन भर खाती रहती कभी बाएं तो कभी दायें से, कभी ऊपर, तो कभी नीचे से !

रुबिन और मित्तो ने घास के उस टीले में तीन दिन बिताये। रुबिन, मित्तो के साथ ही बड़ा हुआ था। वो उसे हमेशा से प्यार करता था, पर इन तीन दिनों में मित्तो के प्रति उसका अनुराग बेशुमार बढ़ा था। मित्तो, रुबिन को दूध पिलाती और उसे गर्म रखती। अपने धीरज से वो उसे शांत रखती। इन तीन दिनों में रुबिन ने उसे न जाने कितनी कहानियां सुनायीं, जिन्हें मित्तो ने अपने कान खड़े कर बड़े ध्यान से सुना। जब रुबिन उसके माथे को सहलाता तो मित्तो उसके हाथों को प्यार से चाटती जब वो कहती, 'माँ तो उसका अर्थ होता, 'मैं भी तुमसे प्यार करती हूँ।' तीसरी रात तूफान कुछ थमा और बाहर आसमान में चाँद चमका। दूर-दूर तक फैली चांदनी में, बर्फ चमकने लगी। फिर रुबिन घास के टीले को खोद कर बाहर निकला। बाहर सफेद सन्नाटा था। आसमान में तारे चमक रहे थे और चाँद अपनी निर्मल रोशनी चारों तरफ बिखेर रहा था।

चौथे दिन सुबह रुबिन को बाहर बर्फ पर फिसलने वाली बेपहिया गाड़ी की आवाज सुनायी दी। घास का टीला सड़क के काफी पास था। गाड़ी पर सवार किसान ने रुबिन को कसाई के पास शहर जाने का रास्ता नहीं, बल्कि गाँव वापिस जाने का रास्ता बताया। टीले में रुबिन ने प्रण लिया था कि वो मित्तो को कभी नहीं बेंचेगा। परिवार और पड़ोसियों ने, रुबिन और बकरी को ढूँढने की बहुत कोशिश की, परन्तु उन्हें उनका कोई नामोनिशान नहीं मिला। व दोनों हमेशा के लिए कहाँ खो गए ? माँ और दोनों बहनें, रुबिन को याद कर फूट-फूट कर रोयीं पिता बाहर से शांत, पर वो भी अन्दर से बहुत दुखी थे। तभी एक पड़ोसी दौड़ता हुआ आया। उसने रुबिन और मित्तो को सड़क पर आते हुए देखा था। इससे परिवार में खुशी की एक जबरदस्त लहर दौड़ी। रुबिन ने उन्हें पूरी कहानी सुनायी - कैसे उसे एक घास का टीला मिला और कैसे मित्तो ने उसे दूध पिलाया।

उसके बाद से परिवार में सबने मित्तो को बेंचने का इरादा छोड़ दिया। अब क्यूंकि कड़ाके की सर्दी पड़ने लगी थी इसलिए लोगों को गर्म खालों की जरूरत पड़ने लगी थी। इससे ऐरेन का धंधा चल निकला था। हनुक्का के त्यौहार पर रुबिन, मिरियम और एना ने मोमबत्तियां जलाने के बाद 'ड्राईडील' नाम का वाद्ययन्त्र बजाया। मित्तो अलाव के पास बैठी झिलमिल करती मोमबत्तियों और बच्चों को देखती रही। कभी-कभी रुबिन उससे पूछता, 'मित्तो, क्या तुम्हें मेरे साथ घास के टीले में बिताये दिन याद हैं?' तब मित्तो मुस्कुराती और अपना सफेद सिर हिलाते हुए कहती, 'माँ.....' सिर्फ यह एक शब्द, उसके सारे विचार और प्यार बयां कर देते।

-समाप्त

• रोचक...

सतलुज नदी

तिब्बती पठार से निकलकर भारत होते हुए पाकिस्तान तक बहने वाली सतलुज नदी न सिर्फ एक जरूरी नदी है, बल्कि एक रणनीतिक सीमा भी रही है जिसने साम्राज्यों के उत्थान और पतन को आकार दिया है। इतिहासकारों ने अक्सर सतलुज को हिंदुस्तान पर शासन करने की कुंजी बताया है। सदियों तक उत्तर पश्चिम से भारतीय उपमहाद्वीप में आने वाली सेनाओं के लिए सतलुज सबसे बड़ी भौगोलिक बाधा थी। मोहम्मद गोरी, खिलजी शासक, मुगल और बाद में अहमद शाह अब्दाली सहित कई आक्रमणकारियों और शासकों द्वारा किए गए सैन्य अभियान में सभी को उत्तरी भारत में और आगे बढ़ने से पहले इस नदी का सामना करना पड़ता था। मध्यकाल में सतलुज को पार करना एक बड़ी उपलब्धि मानी जाती थी। ऐसा इसलिए क्योंकि इससे दिल्ली सल्तनत का रास्ता साफ हो जाता था। इसे व्यापक रूप से उत्तरी भारत के बड़े हिस्से पर राजनीतिक नियंत्रण का प्रवेश द्वार माना जाता था।

• जहर?

जहर के मामले में कॉमन क्रेट को भारत में सबसे जहरीला सांप माना जाता है। इसका न्यूरोटॉक्सिक जहर भारतीय कोबरा की तुलना में लगभग 15 गुना ज्यादा शक्तिशाली माना जाता है। हालांकि कोबरा अक्सर काटने के दौरान काफी ज्यादा मात्रा में जहर डालता है, लेकिन क्रेट का जहर कहीं ज्यादा गाढ़ा होता है। यहां तक कि इसकी थोड़ी सी भी मात्रा नर्वस सिस्टम को गंभीर रूप से बाधित कर सकती है। इससे चिकित्सा उपचार में देरी होने पर सांप का डंक काफी ज्यादा घातक साबित हो सकता है। दोनों सांपों में न्यूरोटॉक्सिक जहर होता है। लेकिन वे अलग-अलग तरीकों से नर्वस सिस्टम पर हमला करते हैं।